(क) कोश : अर्थ एवं स्वरूप

कोश शब्द का प्रयोग प्राचीनकाल से ही ऋग्वेद, उपनिषद्, पुराण आदि ग्रंथों में देखने को मिलता है। देवनागरी लिपि में यह शब्द दो प्रकार -- कोष (मूर्धन्य 'ष') और कोश (तालव्य 'श') से लिखा जाता है। संस्कृत कोश 'शब्द कल्पद्रुम' में इस शब्द के दोनों रूपों की व्युत्पत्तियाँ इस प्रकार दी गई हैं --

कोश -- (पु.) कुश्यते संश्लिष्यते। कुश संश्लेषणे + घञ् कर्तारि चेति अधिकराणादौ घञ्।

कोष -- (पु.) क्ली. कुष्यते आकृष्यंते फलपुष्पोत्पादक मधुमयपरागादयो यस्मिन्। कुष् ग निष्कर्षे + घञ् कर्तारि चेति अधिकरणे घञ्।

3. त्रिकांड चिंतामणि
4. हिंदी : प्रयोजनमूलक हिंदी और अनुवाद, डॉ. पूरनचंद टंडन, पृष्ठ 492

इन दोनों ही रूपों में 'कोश' शब्द पीपा (द्रव्य पदार्थ रखने का बर्तन), बादल, म्यान, कलिका, घन, समुदाय, भंडार, पान-पात्र, चषक, घनसंहिति, आवास-गृह, शरीर, पुस्तकागार, शब्दादि संग्रह, अर्थ-समूह आदि अनेक अर्थों में प्रयुक्त होता है।"[1]

अंग्रेजी में 'डिक्शनरी' कोश शब्द का समानार्थी है। मूलतः यह लैटिन भाषा का 'dicere' शब्द है जो कहना या बोलने के अर्थ में व्यवहृत होता है। इस 'dicere' शब्द से विकसित होकर 'डिक्शन' शब्द बना, जिसका मूल अर्थ है -- "जो बोला जाए या शब्द।' 'Dictionary' शब्द से अभिप्राय इन्हीं शब्दों के समूह से है। अंग्रेजी में कोश शब्द के लिए एक अन्य शब्द 'लेक्सिकन' (Lexicon) भी प्रयुक्त होता है, जो मूलतः यूनानी Legein धातु से संबद्ध है। Legein का अर्थ है -- 'कहना' या 'बोलना'। इससे यूनानी शब्द में Lexis की व्युत्पत्ति हुई जो 'शब्द' अर्थ में प्रयुक्त होता है। इसके अतिरिक्त अंग्रेजी में शब्दकोश के लिए 'ग्लॉसरी' (Glossary) और 'थिसॉरस' (Thesaurus) शब्द का भी प्रयोग किया जाता है। अरबी, फारसी तथा उर्दू में 'लुगत' को शब्दकोश का ही द्योतक माना जाता है। इस प्रकार हिंदी 'कोश' अंग्रेजी 'डिक्शनरी', 'लेक्सिकन', 'ग्लॉसरी' एवं 'थिसॉरस' तथा अरबी-फारसी-उर्दू 'लुगत' मूल अर्थ की दृष्टि से एक समान है।[2]

किसी भी भाषा में पाए जाने वाले शब्द-प्रयोगों की जानकारी हेतु कोश अत्यंत उपयोगी है। कोश की परिधि में केवल वर्णानुक्रम से दिए गए शब्द तथा उनके अर्थों से युक्त 'शब्दकोश ही नहीं आते, वरन् इसके अंतर्गत विलोम कोश, पर्याय कोश, मुहावरा कोश, लोकोक्ति कोश, नाम कोश, उद्धरण कोश आदि भी समाविष्ट हैं। इस प्रकार 'कोश' व्यापक संकल्पना से युक्त ऐसा शब्द है, जिसकी सर्वग्राह्य परिभाषा देना अत्यंत कठिन कार्य है।

Scanned with CamScanner

4.6 विश्व कोश :

4.6.1 शब्द कोश और विश्वकोश का अंतर स्पष्ट करते हुए एन्साइक्लोपीडिया ब्रिटैनिका में लिखा है, A dictionary explains words whereas an encyclopedia explains things. विश्व कोश में वस्तुतः यह प्रयास किया जाता है कि संबद्ध विषय पर उपलब्ध सभी जानकारी एक ही स्थान पर प्रस्तुत कर दी जाए । इस विश्व में मानव सभ्यता के इतिहास में ज्ञान-विज्ञान का इतना विकास हुआ है कि सारा ज्ञान किसी भी विद्वान के पास उपलब्ध नहीं हो सकता । जिस विषय का हम विशेष अध्ययन करते हैं उसका भी हमें पूरा ज्ञान हमें नहीं हो पाता, सारे विषयों की तो बात ही क्या करनी ! विशेषज्ञता के इस युग में स्थिति यह हो गई है कि डाक्टर भी अब शरीर के विभिन्न भागों के अलग अलग हैं । आँखों का डाक्टर पेट या हृदय के रोगों का उपचार करना तो दूर की बात, रोग पहचान भी नहीं पाता। अतः आज विश्वकोश जैसे ग्रंथों की उपयोगिता और भी बढ़ गई है ।

4.6.2 अंग्रेजी शब्द "एन्साइक्लोपीडिया" का उद्गम ग्रीक शब्द Enkyklopaideia" से हुआ है जिसका अर्थ है एक वृत्त या सीखने की पूर्ण प्रणाली । यूरोप में विश्वकोश के सन्दर्भ में यद्यपि इसका प्रथम प्रयोग जर्मन विद्वान पाल स्केलिश (Paul Scalich) ने सन 1559 में अपने ग्रंथ के शीर्षक में किया जो इस प्रकार है, " Encyclopaedia : Seu, orbis disciplinarum, tam Sacrarum quam prophanum epistemon...." (Encyclopaedia : or Knowledge c

Scanned with CamScanner

लोकोक्ति कोश, नाम कोश, उच्चारण कोश आदि भी समाविष्ट हैं। इस प्रकार कोश व्यापक संकल्पना से युक्त ऐसा शब्द है, जिसकी सर्वग्राह्य परिभाषा देना अत्यंत कठिन कार्य है। तथापि संस्कृत, हिंदी एवं अंग्रेजी कोशों एवं ग्रंथों में विद्वानों ने कोश की जो परिभाषाएँ दी हैं वे प्रयोक्ताओं की अपेक्षाओं के अनुसार कोश का स्पष्ट लक्षण प्रस्तुत करती हैं –

संस्कृत कोशों में कोश उस ग्रंथ को कहा गया है जिसमें शब्दों का संकलन करके उनका अर्थ दे दिया जाए – अर्थसहित शब्द संकलनरूप केशम्। 'त्रिकांड चिंतामणि' ग्रंथ

में कोश को इस प्रकार परिभाषित किया गया है –

कोषो विव्य धनेऽपि स्यात् कुऽमलासिपिधानयोः।
पनस्यादिफलस्यान्तः कोषः शब्दस्य संग्रहः।।[1]

अर्थात् कोश वह ग्रंथ है जिसमें शब्दों का संग्रह किया जाता है।

हिंदी शब्दकोशों में भी कोश की कतिपय महत्त्वपूर्ण परिभाषाएँ दी गई हैं। 'मानक हिंदी कोश' के अनुसार – कोश-पु./सं. कुश (मिलना) + घञ् अर्थात् वह ग्रंथ है जिसमें किसी विशेष क्रम से शब्द दिए गए हों और उनके आगे अर्थ दिए हों। 'हिंदी शब्द सागर' में कोश को इस तरह परिभाषित किया गया है – 'संज्ञा' पु./सं.। वह ग्रंथ जिसमें अर्थ एवं पर्याय सहित शब्द इकट्ठे हों, जैसे – -अमरकोश, मेदिनी कोश' हिंदी के प्रसिद्ध भाषाविद् एवं कोशकार डॉ. भोलानाथ तिवारी ने कोश को इस रूप में परिभाषित किया है – "कोश ऐसे ग्रंथ को कहते हैं जिसमें भाषा विशेष के शब्दादि का संग्रह होया संग्रह के साथ उनके उसी या दूसरी भाषाओं के अर्थ, पर्यायों, प्रयोग या विलोम हों या विशिष्ट अथवा विभिन्न विषयों की प्रविष्टियों की व्याख्या, नामों (स्थान, व्यक्ति आदि) का परिचय या कथनों आदि का संकलन क्रमबद्ध रूप में हों।

'इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका' में कोश की परिभाषा देते हुए लिखा गया है कि "कोश एक पुस्तक है जिसमें किसी भाषा के शब्द और अर्थ या तो उसी भाषा में अथवा किसी अन्य भाषा में, सामान्यतया वर्णानुक्रम में दिए रहते हैं। प्रायः शब्दों के उच्चारण, उसकी व्युत्पत्ति और प्रयोग का विवरण भी उनमें रहता है।"

"Dictionary, a book listing words of a language with their meaning in the same or another language usually in alphabetical order, often with data regarding pronounciation origin and usage."[2]

इस प्रकार कहा जा सकता है कि कोश से तात्पर्य शब्दों के ऐसे संग्रह से है जिसमें

Scanned with CamScanner

इस प्रकार कहा जा सकता है कि कोश से तात्पर्य शब्दों के ऐसे संग्रह से है जिसमें शब्दों के प्रचलित एवं शुद्ध रूप, व्युत्पत्ति, अर्थ, पर्याय, विलोम, व्याख्याएँ आदि क्रमबद्ध

रूप में दी गई हों।

(ख) कोश के विविध प्रकार

कोशों की विशेषताओं के आधार पर उन्हें कई वर्गों में विभाजित किया जा सकता है। किंतु इससे पूर्व कोश-वर्गीकरण के मुख्य आधारों को जान लेना आवश्यक है, जो इस प्रकार है --

(1) उद्देश्य

(2) भाषा

(3) प्रविष्टि

(4) काल

(5) अर्थ

(6) प्रविष्टि क्रम

(7) विशिष्ट दृष्टिकोण

उद्देश्य की दृष्टि से कोश में अर्थ, प्रतिशब्द, पर्याय, विलोम, परिचय, विवेचन, व्युत्पत्ति और उच्चारण आदि का संकलन होना चाहिए। इस दृष्टि से शब्दकोश में अर्थ, पारिभाषिक कोश में प्रतिशब्द, पर्याय और विलोम कोश में क्रमशः पर्याय और विलोम व्युत्पत्ति और उच्चारण कोश में व्युत्पत्ति और उच्चारण, विश्वकोश में प्रायः परिचय तथा विश्वकोशों जैसे भाषा-विद्वान् कोश में विवेचन एवं परिचय आते हैं। एक कोश में एकाधिक उद्देश्यों का भी समावेश हो सकता है। जैसे, 'हिंदी शब्द-सागर' में बाबू श्याम सुंदर दास ने अर्थ, व्युत्पत्ति और परिचय तीनों को समाविष्ट किया है। 'भाषा' के आधार पर एकभाषिक, द्विभाषिक या बहुभाषिक कोश हो सकते हैं। 'प्रविष्टि' के आधार पर शब्द, मुहावरा, लोकोक्ति आदि कोश-भेद हो सकते हैं। काल की दृष्टि से एक कालिक, (जैसे बांग्ला की चलंतिका कोश), ऐतिहासिक कोश हो सकते हैं। 'अर्थ-भेद' की दृष्टि से समानार्थी, विलोमार्थी, अनेकार्थी,

1. हिंदी : प्रयोजनमूलक हिंदी और अनुवाद, डॉ. पूरनचंद टंडन, पृष्ठ 497

Scanned with CamScanner